Vol. 4, Issue: 6, August: 2016
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भौतिक चिन्ताका तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. शशि सिंह
विभागाध्यक्षा शिक्षा विभाग,
गोकुलदास महिला महाविद्यालय,
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढ़ंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक के साथ सोचने समझने की क्षमता का विकास होता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो। अर्थात् शारीरिक और मानसिक रूप से उसमें शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता हो क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति ही अपने जीवन, समाज और राष्ट्र के प्रति पूर्ण योगदान कर सकता है। परन्तु आज विद्यार्थी अपने भविष्य और शिक्षा को लेकर बहुत चिन्तित रहते हैं और बहुत जल्दी अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं।

एक शिक्षक विद्यार्थी की आवश्यकता, क्षमता रूचि, योग्यता, विशेषताः आदि को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करता है। उन विद्यार्थियों में कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जिनकी आवश्यकता, क्षमता, योग्यता एवं रूचि सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न होती है। यह बालक चिन्ता ग्रस्त भी हो सकते हैं इनको अधिक शैक्षिक चिन्ता रहती है जिस कारण इनका कक्षा तथा कक्षा के बाहर मन नहीं लगा पाताऔर इनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है तथा उनका सर्वांगींण विकास भी प्रभावित होता है। प्रस्तुत लघु शोध पत्र से प्राप्त निष्कषों के माध्यम से इनकी शैक्षिक चिन्ता को दूर करने का प्रयास किया जायेगा।

आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों में कुछ विषय चिन्ताग्रस्त विद्यार्थियों के अधिक चिन्ताग्रस्त रहने के कारण उनके मानसिक स्तर से ऊपर के स्तर के सिद्ध हो जाते हैं। इन विषयों को समझने के लिए चिन्ताग्रस्त विद्यार्थिया को अतिरिक्त शैक्षिक प्रयास कराना परिवार व विद्यालय का कार्य है। परन्तु इन दोनों के ध्यान न देने के कारण इनमें शैक्षिक पिछड़ापन आ जाता है। चिन्ताग्रस्त विद्यार्थिया के पिछड़ेपन के कई और भी कारण है। जिनमें मुख्यतः उनका दूषित वातावरण, गरीबी, अशिक्षित परिवार, परिवार में स्थान, इनके प्रति स्नेह का अभाव, माता पिता का ध्यान न देना, परिवार का उत्तरदायित्वएवंभविष्य की चिन्ताजो इनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता हैइनकी चिन्ता का प्रभाव उनकीशैक्षिक उपलब्धि, सीखने मे सृजनात्मकता, रूचि, स्मृति और व्यक्तित्त्व आदि पर सीधा पड़ता है। जो इनके शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से चिन्ता ग्रस्त रहने का मुख्य कारण है। इन विद्यार्थियों के शैक्षिक चिन्ता पर ध्यान नहीं दिया गया तो इनका सर्वांगींण विकास भी प्रभावित हो

जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से प्राप्त निष्कषों के द्वारा इन विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता को कम करने का प्रयास किया जायेगा

शिक्षा में निम्नलिखित शोधार्थियों ने अपने अध्ययन में चिन्ता से सम्बन्धित विद्यार्थियों पर प्रकाश डाला है। जिसमें सी.आर. परमेरा (1973), एस. गरवार (1974), सिंह आर. (1978)ए आशा. टी. (1980), सक्सेना आर. (1983), अमीना एम0 (1991), जी. देवराज (1992), कुमार एस0 (2007), मीणा डी.के. (2010) एवं कुमार आर. (2013) प्रमुख हैं।

समस्या कथन

''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौक्षिक चिन्ताका तुलनात्मक अध्ययन।''

शब्दों का परिभाशिकरण

उच्चमाध्यमिक स्तर :—उच्च माध्यमिक स्तर से आशय कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा से है।

भौक्षिकचिन्ताः—किसी आन्तरिक उड्डीयन से उत्पन्न दुखद और भयमूलक रागात्मक अनुभवों की दशा, जिसमें चेतना का गुण दुखद अनुभवों में चेतना के गुण से अलग होता है। हरलॉक— के अनुसार चिन्ता एक प्रकार का भय है जो वास्तविक कारणों की अपेक्षा कल्पना के द्वारा अधिक पैदा होती है।

शोध विधिः—वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरणः—वर्तमान शोध हेतु ए0के0पी0 सिन्हा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्शः— वर्तमान शोध हेतु कक्षा 11 वीं व 12 वीं में अध्ययन करने वाले लगभग 40 विद्यार्थियों को शामिल कर उनको लिंग, क्षेत्र, वर्ग एवं जाति में वर्गीकृत किया किया गया है।
चर :—स्वतन्त्र चर – विद्यार्थी, **आश्रित चर**—शैक्षिक चिन्ता

शोध के उद्देश्य

उच्चतरमाध्यमिक स्तर केछात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।

1. उच्चतरमाध्यमिक स्तर केग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ताका तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्चतरमाध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ताका तुलनात्मक अध्ययन।
3. उच्चतरमाध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की मुख्य परिकल्पनाएं

1. उच्चतरमाध्यमिक स्तर केछात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिन्तामें सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. उच्चतरमाध्यमिक स्तर केग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्तामें सार्थक अन्तर पाया जाता है।

3. उच्चतरमाध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्तामें सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. उच्चतरमाध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

''उच्चतरमाध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भौक्षिक चिन्ताका मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	20	28.05	6.05	38	2.68
छात्रायें	20	35.06	7.92		

व्याख्या :–तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 28.05 एवं 6.05 प्राप्त हुआ है। जबकि छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 35.06 एवं 7.92 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 2.68 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से कम है। अतः छात्रों एवं छात्राओंकोशैक्षिक चिन्तामें सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 1 अस्वीकार की जाती है।

''उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थी एवं भाहरी विद्यार्थियों की भौक्षिक चिन्ताका मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–2

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
ग्रामीण विद्यार्थी	20	27.9	6.36	38	0.51
शहरीविद्यार्थी	20	28.67	6.98		

व्याख्या :–तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः27.9 एवं 6. 36 प्राप्त हुआ है। जबकि शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 28.67एवं 6.98 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 0.51 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से कम है। कम मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों कीशैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 2 अस्वीकार की जाती है।

''उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थी एवं विज्ञान वर्ग के विद्याथियों की भौक्षिक चिन्ताका मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–3

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
कला वर्ग के विद्यार्थी	20	27.75	6.67	38	2.88
विज्ञान वर्ग केविद्यार्थी	20	31.13	4.34		

व्याख्या :–तालिका से स्पष्ट है कि कला वर्ग के विद्याथियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमश:27.75 एवं 6.67 प्राप्त हुआ है। जबकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 31.13 एवं 4.34 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 2.88 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से अधिक है। अधिक मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। अतः कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियोंकीशैक्षिक चिन्तामें सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 3 स्वीकार की जाती है।

''उच्चतर माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग के विद्याथियों एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की भौक्षिक चिन्ता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–4

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थी	20	28.65	8.48	38	2.38
अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी	20	35.50	8.14		

व्याख्या :–तालिका से स्पष्ट है किअनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमश:28.65 एवं 8.48 प्राप्त हुआ है। जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 35.50 एवं 8.14 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 2.38 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से कम है। कम मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों कीशैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 4 स्वीकार की जाती है।

शोध के निष्कर्ष

1. उच्चतरमाध्यमिक स्तर केछात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।
2. उच्चतरमाध्यमिक स्तर केग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

3. उच्चतरमाध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
4. उच्चतरमाध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एडलर ए.	द ऐजुकेशन ऑफ चिल्ड्रन, लाल बुक डिपो मेरठ।
गुप्ता एस.पी.	''शिक्षा मनोविज्ञान'' शाखा प्रकाशन मेरठ।
शर्मा आर.	चाइल्ड साइकोलॉजी, एटलांटिक प्रकाशन एवं वितरक, दिल्ली।
मंगल एस.के.	शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
प्रसाद प्रा. चौबे	शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक, आगरा।
कुमार डा. नरेश	राष्ट्रीय शिक्षा– विक्रम प्रकाशन, नई दिल्ली।
अरोड़ा रीता	शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, लाल बुक डिपो, मेरठ।
कपिल एच.के.	अनुसंधान विधियाँ –भार्गव प्रिन्टर्स, आगरा।
गुप्त रामबाबू	भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, रतन प्रकाशन मंदिर, आगरा 1996।
रमन बिहारी लाल	शिक्षा दर्शन रस्तोगी पब्लिकेशन, तृतीय संशोधित, संस्करण 1975।